पद्य 2 सूरदास

कवि परिचय:-

जन्म : सन् 1483 (लगभग) मृत्यु : सन् 1563

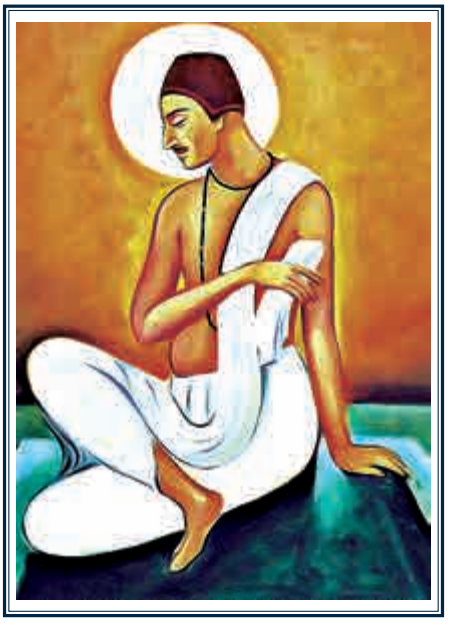

सूरदास के प्रारंभिक जीवन के संबंध में कुछ विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती। वल्लभाचार्य से भेंट होने के पहले वे गऊघाट पर नवधा भक्ति में से दास्य भक्ति को अंगीकार कर विनय-संबंधी पदों की रचना किया करते थे। वल्लभाचार्य से भेंट होने पर उनके आदेश से सूरदास ने श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन करना प्रारंभ किया। वे अंधे थे और उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन शास्त्र-श्रवण, चिंतन, भगवान का कीर्तन, कीर्तन के अनुरूप विविध विषयक पदों की रचना और संतों की मर्यादा के अनुकूल परिभ्रमण करने में व्यतीत किया। भक्ति के निरूपण में उन्होंने वासुदेव-परंपरा में प्रचलित पौराणिक घटनाओं का कहीं-कहीं आश्रय लिया है।

उनकी रचनाओं में 'सूरसागर' प्रसिद्ध है। सूरसागर में श्रीकृष्ण के आसपास की सारी सृष्टि भी उन्हें अपना सखा मानकर उनकी प्रत्येक लीला में भाग लेती है। कवि ने राधा-कृष्ण के प्रेम-प्रसंगों का जो वर्णन किया है, उसमें मानव-हृदय सुख-दुख के भावों से स्पंदित होता रहता है। पाठक श्रीकृष्ण के हँसने के साथ हँसता है, उनके रोने के साथ रोता है और उनकी श्रृंगारिक चेष्टाओं में रागात्मिकता वृत्ति का अनुभव करता है।

सूर-द्वारा वर्णित श्रीकृष्ण अपने मानवीय रूप को छोड़ अतिमानव और कहीं-कहीं अलौकिक रूप को धारण करते हैं।

छाँडि मन हरि विमुखन को संग

जाके संग कुबुधि उपजति है, परत भजन में भंग।

कागहि कहा कपूर चुगाये, स्वान न्हवाये गंग।

खर को कहा अरगजा लेपन, मरकट भूषण अंग।

पाहन पतित बान नहिं बेधत, रीतौ करत निषंग।

'सूरदास' खल कारी कामरि, चढ़त न दूजौ रंग।।

शब्दार्थः- छाँडि - छोड़ो; हरि विमुखन को संग - ईश्वर-विरोधी का साथ; जाके - जिसके; कुबुधि - दुर्बुद्धि; उपजति है - पैदा होती है; परत भजन में भंग - भगवद् भजन में विघ्न पड़ता है; चुगाना - खिलाना; स्वान - कुत्ता; न्हवाना - स्नान कराना; अरगजा - चंदा, केसर आदि मिलाकर किया हुआ सुगंधित लेप; मरकट - बंदर; पाहन - पत्थर; नहिं बेधत - नहीं तोड़ता है; रीतौ - रिक्त; निषंग - तरकस; खल - दुष्ट; कामरि - कंबल; दूजौ - दूसरा।

सूरदास अपने मन में दुर्जन - संगति छोड़ देने को कहते हैं। जो भगवान से विमुख है अर्थात् जो भगवान को नहीं मानता, वही दुर्जन - खल है।

हे मन! जो भगवान से विमुख रहता है, उसकी संगति छोड़ देना। जिसके साथ रहने से दुर्बुद्धि पैदा होती है और भगवद् भजन में विघ्न पड़ता है, उसका संग छोड़ देना चाहिए। कह सकते हैं कि अपनी संगति से उसमें परिवर्तन लाऊँगा। उसको हरिभक्त बनाऊँगा। लेकिन यह संभव नहीं है। क्या कौए को कर्पूर खिलाने से वह सफ़ेद बनेगा? कुत्ते को गंगा में नहाने से क्या वह पवित्र बनेगा? गधे के बदन पर चंदन आदि सुगंध-द्रव्य लगाने से क्या फ़ायदा होगा? बंदर के अवयवों में आभूषण पहनाने से क्या वह सुंदर दिखेगा? ये सभी प्रयत्न जैसे व्यर्थ हो जाते हैं, वैसे ही दुष्ट को सज्जन बनाने का तेरा प्रयत्न भी व्यर्थ हो जाएगा। अगर कोई धनुर्धारी पत्थर पर तीर छोड़ता है, तो वह तीर पत्थर को तोड़ता नहीं, उल्टे अपनी इस मूर्खता के कारण वह धनुर्धारी अपने तरकस को ही खाली कर देता है। हे मन! याद रखो, दुर्जन काले कंबल के बराबर है। उसपर दूसरा रंग नहीं चढ़ता । अर्थात् दुर्जन कभी भी सज्जन नहीं बन सकेगा।

प्रभु मोरे अवगुनचित न धरो।

समदरसी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो।

इक नदिया इक नार कहावत मैलो नीर भरो।

जब दोऊ मिलि एक बरन भये सुरसरि नाम परो।

इक लोहा पूजा में राखत इक घर बधिक परो।

पारस गुन अवगुन न चितवै कंचन करत खरो।

यह माया भ्रमजाल कहावै 'सूरदास' सगरो।

अबकी बार मोहिं पार उतारो नहिं पन जात टरो।।

शब्दार्थः- समरदसी - समदर्शी, सब पर समान दृष्टि रखनेवाला; तिहारो - तेरो; नार - नाला; मैलो - मैला; एक बरन - एक रंगवाले, एकाकार; बधिक - वध करनेवाला, कसाई; पारस - एक पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है, स्पर्शमणि; चितवै - देखता है; खरो - खालिस, स्वच्छ; सगरो - सारा, सब; पन जात टरो - प्रण टल जाता है।

भगवान शरणागत रक्षक है। भगवान की प्रतिज्ञा है कि जो कोई अनन्य भाव से मेरी शरण में आएँगे, उसके गुण और अवगुणों पर ध्यान न देकर मैं उनको अपना लूँगा। उनका उद्धार करूँगा। भगवान भक्त के अनन्य भाव को ही देखता है, अतः वे समदर्शी हैं। उनकी इस प्रतिज्ञा का स्मरण दिलाकर सूरदास भगवान से कहते हैं, मेरे भी अवगुणों पर ध्यान न देकर मेरा उद्धार करो, अन्यथा तुम्हारी प्रतिज्ञा झूठी हो जाएगी।

हे प्रभु! मेरे अवगुणों पर ध्यान न दो। तुम्हारा नाम समदर्शी है। अपने इस नाम को सार्थक बनाना चाहते हो तो मेरा उद्धार करो। देखो, एक प्रवाह है, जिसे नदी कहते हैं। दूसरा है नाला, जिसमें गंदा पानी भरा हुआ है। यह नदी है, वह नाला जब एक में मिल जाते हैं, गंगा नदी में मिलकर एकाकार धारण करते हैं, तब उसका 'सुर सरिता' (देवलोक की पवित्र नदी) नाम पड़ता है। इसी प्रकार दो लोहे की वस्तुएँ हैं, जिनमें एक पूजा गृह में रखी गयी है और दूसरी कसाईखाने में, लेकिन पारस इन दोनों में फ़रक नहीं करता। छूते ही दोनों को खालिस सोना बना देता है। छोड़ दीजिए इन सब बातों को, क्योंकि तर्क-वितर्क की ये बातें माया या भ्रमजाल कही जाती है। मेरी विनती यही है कि अब की बार मेरा उद्धार करो, अन्यथा तुम्हारी प्रतीज्ञा असत्य हो जाएगी।

यहाँ निदर्शना अलंकार है।

मैया मोहि दाऊ बहुत खिजायो।

मोसों कहत मोल को लीनो तू जसुमति कब जायो।

कहा कहौं इस रिस के मारे, खेलन-हौं नहिं जातु।

पुनि-पुनि कहत कौन है माता, को है तुम्हारो तातु।

गोरे नन्द जसोदा गोरी, तुम कत श्याम सरीर।

चुटकी दै-दै हँसत बाल सब, सिखै देत बलबीर।

तू मोही को मारन सीखी, दाउहिं कबहु न खीजै।

मोहन को मुख रिससमेत लखि, जसुमति सुनि-सुनि रीझै।

सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही कौ धूत।

'सूरस्याम' मो गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।।

शब्दार्थः- दाऊ - बड़ा भाई (बलराम), खिजायो - चिढ़ाया; मोसो - मुझसे; मोल को लीनो - मोल लिया हुआ; जायो - जन्म दिया; रिस - रोष, गुस्सा; हौं - मैं; तातु - पिता; कत - क्यों, कैसे; चुटकी दै - दै - चुटकी बजा बजाकर; सिखै देत - सिखा देते हैं; दाउहिं कबहु न खीजै - बड़े भैया पर कभी क्रोधित नहीं होती; चबाई - चुगलखोर; धूत - धर्त; गोधन की सौं - गायों की क्रसम।

यह कृष्ण की बाललीला से संबंधित पद है। शिशु कृष्ण अब बालक बन गया। वह दूसरे बालकों के साथ खेलों में भाग लेने लगा। खेलते-खेलते न जाने बालकों में स्पर्धा, ईर्ष्या, असूया आदि कितने भाव पैदा होते है। बालक कृष्ण के साथ भी यही बात हो गयी। दूसरे बालकों के साथ उसका झगड़ा हो गया। झगड़े में उसका बड़ा भाई बलराम भी उन लड़कों के साथ हो गया। सब मिलकर कृष्ण को खिजाने लगे। कृष्ण इसकी शिकायत माँ यशोदा से करता है।

माँ! मुझे भैया ने बहुत खिजाया है। वह मुझसे कहता है कि तू मोल लिया हुआ लड़का है; यशोदा ने तुझे कब जन्म दिया? क्या कहूँ? इस गुस्से के कारण मैं खेलने नहीं जाता। वह

बार-बार कहता है, तेरी माता कौन है? तेरा पिता कौन है? नंद और यशोदा दोनों गोरे हैं तब तुम क्यों श्याम-शरीर के हो? बलवीर ये बातें अन्य बालकों को सिखा देता है और वे सब चुट की बजा-बजाकर हँसते हैं। तूने तो मुझ ही को मारना सीखा है, भैया पर कभी गुस्सा नहीं करती। कृष्ण ये बातें गुस्से के साथ कहता था। मोहन कृष्ण के गुस्से से भरे मुख से इन बातों को सुनकर यशोदा का मन आनंद से भर जाता था। वह कहती है - "कृष्ण! सुनो, बलभद्र चुगलखोर है, वह जन्म सेः ही धूर्त है। मुझे गायों की कसम है; मैं ही तेरी माँ हूँ और तू मेरा पुत्र है। वात्सल्य रस का सुंदर उदाहरण है यह पद।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिएः-

1. सूरदास क्यों ईश्वर विरोधी के संग को छोड़ने की बात कहते हैं?

2. क्या कौआ सफेद हो सकता है? इस पद के माध्यम से सूर क्या कहना चाहते हैं?

3. गधा, कुत्ता, कौआ आदि के उदाहरण के द्वारा सूरदास क्या उपदेश देना चाहते हैं?

4. पत्थर पर तीर चलाने का नतीजा क्या होता है?

5. काले कंबल पर दूसरा रंग नहीं चढ़ता? यह क्यों कहा गया है?

6. बंदर के अंगों में आभूषण पहनाने से वह सुंदर दिखेगा नहीं? सूरदास ने किसके लिए यह उदाहरण दिया है?

7. सूरदास प्रभु से अपने उद्धार करने की माँग किस तर्क पर करते हैं?

8. सूरदास अवगुणों को पवित्र मानने के लिए कौन-सा उदाहरण देते हैं?

10. भगवान की प्रतिज्ञा को सत्य प्रमाणित करने के लिए सूर ने कौन तर्क रखा?